समीक्षा™ इंस्टीट्यूट
Sign of Success

मध्यकालीन भारतीय इतिहास

SHORT REVISION NOTES

Near Bank of India, Phoolbagh Chauraha, Gwalior, Ph: 0751-4062762,
Near of Vivekanand school, Pinto park Tiraha , Gwalior, Ph: 0751-4084370,

मध्यकालीन प्रमुख फारसी इतिहासकार

समय	इतिहासकार	ग्रन्थ	आश्रयदाता
1350 से 1400 ई. (ल.)	शम्स-ए-सिराज अफ़ीक	तारीखे फिरोजशाही	फिरोज तुगलक
16वीं शताब्दी	बदायूँनी	मुन्तखब-उत-तवारीख	अकबर
16वीं शताब्दी	अब्बास खाँ सेरवानी	तारीखे शेरशाही (1579 ई.)	अकबर
16वीं शताब्दी	आरिफ कंधारी	तारीखे अकबरी (1585 ई.)	अकबर
17वीं शताब्दी	अब्दुल हमीद लाहौरी	पादशाहनामा	शाहजहाँ
17वीं शताब्दी	खाफी खाँ	मुन्तखंब-उल-लुबाव	औरंगज़ेब
17वीं शताब्दी	ईश्वरदास नागर	फुतूहाते आलमगीरी	औरंगज़ेब

उपनाम	वास्तविक नाम
लाखबख्श	कुतुबुद्दीन ऐबक
जिल्ले अल्लाह	बलवन
सिकन्दर सानी, सिकन्दर द्वितीय	अलॉउद्दीनख़िलजी
गाज़ी मलिक, अपने युग का अरस्तू	ग्यासुद्दीन तुगलक
शैतान का साथी ,तूतिया-ए-हिन्द	मुहम्मद तुलगक
तुर्क अल्लाह	अमीर खुसरो
स्वयं को 'खलीफा' कहा	मुबारकशाह
बंगाल का कैब्रे	मुकुन्दराम चक्रवर्ती
अभिनव भरताचार्य	कुम्भा
दक्कन की लोमड़ी	अमीर अली बरीद
हिन्द का आध्यात्मिक गुरु	ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
कलन्दर	बाबर
फर्जन्द पुत्र	बहलोल लोदी
विक्रमादित्य, विक्रमजीत	हेमू
खानखाना	अब्दुर्रहीम

कविराज कविप्रिय	बीरबल
अमीर-उल-उमरा	भगवानदास
कण्ठाभरण-वाणी-विलास	तानसेन
शेखूबाबा	जहाँगीर
मुमताज महल	अर्जुमंद बानो बेगम
नूरजहाँ	मेहरून्निसा
बुतशिकन	सिकन्दरशाह
काल के गाल पर अमिट आँसू	ताजमहल
पूर्व का राफेल	बेहजाद
जरी कलम	मुहम्मद हुसैन
भारत का सादी	मीर हसन देहबली
जिन्दा पीर, दरवेश	औरंगज़ेब
रंगीला बादशाह, रोशन अख्तर	मुहम्मदशाह
जगत गुरु, अबला बाबा, निर्धनों का मित्र	इब्राहिम आदिलशाह
शाह बेखबर	बहादुरशाह
लम्पट मूर्ख	जहाँदार शाह
घृणित कायर	फर्रूखसियर
अली गौहर	शाहआलम द्वितीय

✧मध्य भारत में प्रसिद्ध संस्कृत ग्रन्थों के फारसी अनुवाद

वर्ष	मूल ग्रन्थ	अनुवादक	अनुवादक ग्रन्थ	आश्रयदाता
1582 से 1583 ई.	महाभारत	बदायूँनी, नकीब खाँ, शेख सुल्तान	रज़्मनामा	अकबर
1583 से 1584 ई.	रामायण	बदायूँनी	रज़्मनामा	अकबर
1589 से 1590 ई.	कालिया दमन	अबुल फजल	अयार दानिश	अकबर
1590 ई.	राजतरंगिणी	मुल्ला मुहम्मद	अयार दानिश	अकबर
1593 ई.	लीलावती (गणित)	फैज़ी	अयार दानिश	अकबर
1594 ई.	नल दमयन्ती	फैज़ी	मसनवी नलौदमन	अकबर
1596 ई.	पंचतंत्र	अबुल फजल	अनवारे सहेली	अकबर
1650 ई.	योग वशिष्ठ	दारा शिकोह	अनवारे सहेली	शाहजहाँ
1652 से 1653 ई.	भगवद्गीता	दारा शिकोह	अनवारे सहेली	शाहजहाँ

महत्त्वपूर्ण कथन -

अलबरूनी	''हिन्दुओं में यह दृढ़ विश्वास है कि उनके देश के समान और कोई देश नहीं है, कोई ऐसा राष्ट्र समान नहीं है।'' कोई ऐसा राष्ट्र नहीं है, कोई राजा उनके राजा के समान नहीं है तथा अन्य कोई भी विज्ञान उनके विज्ञान के समान नहीं है''
इल्तुतमिश	''मेरी मृत्यु के पश्चात यह पता लग जायेगा कि मेरी पुत्री के अतिरिक्त मेरे पुत्रों में से कोई भी शासक बनने योग्य नहीं है।''
बलबन	''राजा देवत्व का अंश होता है, उसकी समानता कोई भी मनुष्य नहीं कर सकता'' (अपने पुत्र बुगरा खाँ को कहा)
आर पी. त्रिपाठी	''बलबन एक उत्तम अभिनेता था और अपने दर्शकों को आधुनिक फिल्मी सितारों की भांति मंत्रमुग्ध करता रहता था।''
एलफिस्टन	''यदि रज़िया स्त्री न होती तो उसका नाम भारत के महान् मुस्लिम शासकों में लिया जाता।''
अलॉउद्दीनख़िलजी	''राजा का कोई संबंधी नहीं होता, राज्य के सभी लोगों को अनुचरों के रूप में उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिये।'' (सिद्धांत) ''मैं नहीं जानता कि यह शरीयत के अनुसार है या उसके विरुद्ध , मैं जिस

	काम को राज्य के हित में समझता हूँ, उसके लिये आदेश देता हूँ
जॉन मार्शल	''अलाई दरवाजा इस्लमी स्थापत्य कला के खजाने का सबसे बड़ा हीरा है।''
डॉ. आर.एस. शर्मा	''विश्वासघात में उसका आरम्भ हुआ, दानशीलता में वह विकसित हुआ और आतंक में उसका अंत हो गया।'' (अलॉउद्दीनके सम्बन्ध में)
बरनी	''अलॉउद्दीनख़िलजी ने जब राजसत्ता पायी तब वह शरीयत के नियमों व उपदेशों से काफी हद तक स्वतंत्र था।''
अमीर खुसरो	''उसने कभी कोई कार्य ऐसा नहीं किया जो बुद्धिमानी और अनुभव से भरा हो''।
निजामुद्दीन औलिया (प्रसिद्ध सूफी संत)	दिल्ली अभी बहुत दूर है।, ग़यासुद्दीन तुगलक द्वारा दण्ड देने की धमकी देने पर कहा) कुछ हिन्दू जानते हैं कि इस्लाम एक सच्चा धर्म है किंतु वे इस्लाम को कबूल नहीं करते।''
बरनी	ऐसा भीषण विनाश हुआ कि नगर में मकानों, मोहल्लों में एक भी कुत्ता या बिल्ली दिखायी नहीं दी। मुहम्मद तुगलक ने जब राजसत्ता पायी तब वह शरीयत के नियमों और आदेशों से काफी स्वतंत्र था।
मुहम्मद तुगलक	मेरा साम्राज्य रूग्ण हो गया है और यह किसी भी उपचार से ठीक नहीं होता। वैद्य सरदर्द ठीक करता है तो बुखार हो जाता है, वह बुखाँर ठीक करने की कोशिश करता है, तो और कुछ हो जाता है''।
औरंगज़ेब	मैं अकेला आया था और अकेला जा रहा हूँ, मैंने देश अथवा लोगों का भला नहीं किया तथा भविष्य की कोई आशा नहीं है। (आजम को कहा) पुराने मंदिरों को नहीं तोड़ना चाहिये किंतु कोई नया मंदिर नहीं बनना चाहिये।
बदायूँनी	सुल्तान को अपनी प्रजा व प्रजा को अपने सुल्तान से मुक्ति मिल गई (बदायूँनी द्वारा मुहम्मद तुगलक की मृत्यु पर की गई टिप्पणी)
बुल्हेशाह	आपको ईश्वर न तो मस्ज़िद में, न ही की काबा में, न ही कुरान व अन्य ग्रंथों में न औपचारिक प्रार्थनाओं में मिलेगा, बुल्हा तुम्हें मुक्ति न तो मक्का में, न ही गंगा में मिलेगी, तुम्हें मुक्ति केवल उसी समय मिलेगी जब तुम अपना अहंकार छोड़ दोगे।''
नसीरूद्दीन मुहम्मद	**''जीवन से धैर्य व संकल्प से सफलता की शिक्षा मिलती है।''**
खाफी खाँ	यह शिकायत कि जज़िया के तहत् लाखों में इकट्ठी की गई रकम का थोड़ा

	भी हिस्सा शाही खजाने तक नहीं पहुँचता था।
फिरोज तुगलक	''सर्वशक्तिमान ईश्वर या अल्लाह जब अपने सेवकों की आजीविका वृद्धावस्था में वापस नहीं लेता तो खुद का बंदा होने के नाते भला अपने वृद्ध सैनिकों को कैसे पदच्युत कर सकता हूँ।'' (तारीख-ए-फिरोजशाही पुस्तक से)। ''वह शासक जिसने एक घुड़वसार सैनिक को सम्बन्धित निरीक्षक लिपिक को घूस देने के लिये सोने का एक सिक्का दिया।
रज्जब	''यह ब्रह्माण्ड वेद है, यह सृष्टि कुरान है'। (रज्जब दादूदयाल का शिष्य था)
कबीर	शाक्त और कुत्ते दोनों भाई हैं, जब एक सोता है तो दूसरा भौंकता है'। पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजौ पहार।'
नामदेव	एक पत्थर की पूजा होती है तो दूसरे को पैरों तले रौंदा जाता है, यदि एक भगवान है तो दूसरा भी भगवान है।
गुरुनानक	ईश्वर व्यक्ति के गुणों को जानता है, पर वह सबकी जाति के बारे में नहीं पूछता, क्योंकि दूसरे लोक में कोई जाति नहीं है।
इब्राहीम लोदी	राजाओं का न कोई सम्बन्धी होता है न ही कबीले, सभी लोग और सभी कबीले सेवक है। (अफगानों की समानता की भावनाओं को कुचलकर यह घोषणा की)
अकबर	मैं उन लोगों से नफरत करता हूँ जो चित्रकारी से घृणा करते हैं।
जहाँगीर	मैं किसी चित्रकार की पेण्टिंग को देखकर यह बता सकता हूँ कि किस चित्रकार ने पेण्टिंग का कौन सा भाग बनाया है। (जहाँगीर ने अपनी आत्मकथा तुजुक-ए-जहाँगीर में लिखा)
सर टॉमस रो	जहाँगीर खूब शराब पीता था तथा नूरजहाँ के हाथ का खिलौना था।
अब्दुर रज्जाक	मैंने पूरे विश्व में इसके समान दूसरा शहर न कोई देखा है और न सुना है, यह इस प्रकार बना हुआ है कि एक के भीतर एक इसमें 'सात परकोटें हैं' (विजयनगर राज्य के बारे में लिखा)
कृष्णदेवराय	मुकुटधारी राजा को सदा धर्म को दृष्टि में रखकर शासन करना चाहिये।
फर्ग्युसन	यह फूलों से अलंकृत वैभव की पराकाष्ठा का घोतक है जहाँ तक शैली पहुँच चुकी थी' (कृष्ण देवराय द्वारा निर्मित विट्ठल स्वामी के मंदिर के बारे में कहा)।
लेनपूल	ताजमहल की योजना देवों ने की और उसका निर्माण जौहरियों ने किया।
बर्नियर	ऐसे समय जब कोई व्यक्ति भूमि प्राप्त करता है, तो वह उसमें से अधिकाधिक निचोड़ता है और गरीब मजदूर उसे छोड़कर अन्यत्र पलायन कर जाते हैं।

	(मुगल सूबेदारों के अत्याचारपूर्ण कार्यों का वर्णन करते हुये कहा) जमीन का एक टुकड़ा लेकर जब कृषक कृषि प्रारम्भ करता है, तो कर की अत्यधिक वसूली के कारण उसकी स्थिति खराब हो जाती है और वह कृषि कार्य छोड़कर अन्यत्र चला जाता है। मुगल काल में समस्त भूमि का स्वामी राजा होता था।
रॉबिन्सन	वह कैदी बनाये गये सैनिक अफसरों को युद्ध के बाद मुक्त कर दिया करता था (शिवाजी के लिये कहा)
लॉर्ड लेक	वे मराठे शैतान अथवा वीरों की तरह लड़े। हे ईश्वर! मुझे फिर कभी ऐसी स्थिति में नहीं डालना।
बाजीराव	वृक्ष की टहनियों पर प्रहार करने से अच्छा है, वृक्ष के तने पर प्रहार करना।
दुनाथ सरकार	जब स्वर्ण को ही जंग लग जाये, तो लोहा क्या करेगा ? (उत्तरवर्ती मुगल सम्राट एवं अमीर वर्ग के पतन का वर्णन करते हुये कहा)
शेख निजामुद्दीन औलिया	प्रत्येक राष्ट्र के अपने रीति-रिवाज, अपने विश्वास, अपने किबला होते हैं। सभी मतो ंको एक ही धर्म समझो। मेरे लिये विश्वास (धर्म) और अविश्वास (कुफ्र) समान है, मुझे किसी सम्प्रदाय, धर्म से कुछ भी लेना नहीं है।''

भारत आये प्रमुख विदेशी यात्री

- **मेगस्थनीज (304-299 ई. पू.)** :- यूनानी सम्राट सेल्यूकस निकेटर के दूत के रूप में चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में आया। इसने भारत में प्राप्त अनुभवों को '**इंडिका**' नामक ग्रंथ में लेखबद्ध किया।
- **पेरीप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी (80 ई.)** :- भारतीय तटीय प्रदेशों की यात्रा करने वाला अज्ञात यूनानी लेखक ने इसकी रचना की। इसमें दक्षिण भारतीय राजवंशो के साथ रोमन व्यापार एवं यहाँ के बंदरगाहों आदि का वर्णन है।
- **टॉलमी (द्वितीय शताब्दी ई.)** :- यूनानी भूगोलवेत्ता जिसने 'जियोग्राफी' नामक ग्रंथ की रचना की।
- **फाह्यान (401-411 ई.)** :- सम्राट चंद्रगुप्त-II के शासन काल में भारत की यात्रा पर आने वाला चीनी बौद्ध भिक्षु।
- **कॉस्मस इंडिकोप्लेस्टेज (530-550 ई.)** :- यूनानी भिक्षु जिसके ग्रंथ **'क्रिश्चियन टोपोग्राफी'** में भारतीय अर्थव्यवस्था का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

- **ह्वेनसांग (629-44 ई.)** :- सम्राट हर्षवर्धन के शासन काल में भारत की यात्रा पर आने वाला चीनी बौद्ध भिक्षु। इसके भारत में प्राप्त अनुभव को **'सि-यू-की'** नामक ग्रंथ में प्रस्तुत किया है। इसे **'तीर्थयात्रियों का राजकुमार'** भी कहा गया है। **इत्सिंग (671-95 ई.)** :- चीनी बौद्ध तीर्थयात्री जिसने 'बायोग्राफीज आफ इमिनेंट मोंक्स' (प्रमुख बौद्ध भिक्षुओं की आत्मकथायें) नामक ग्रंथ में भारत की दशा का भी वर्णन किया है।
- **इब्न खुर्दादब (864 ई.)** :- अरब भूगोलवेत्ता जिसने अपने ग्रंथ **'किताबुल मसालिक बल ममालिक'** में भारत की अंतर्संरचना व्यवस्था का विवरण दिया है।
- **अलमसूदी (957 ई.)** :- अरब यात्री जिसका ग्रंथ **'महमूद जहाब'** पश्चिमी भारत के इतिहास के लिये उपयोगी है।
- **मुहम्मद इब्न अहमद अलबरूनी (1024-30 ई.)** :- महमूद गजनवी के साथ भारत आने वाला अरबी यात्री। अपनी पुस्तक **'किताबुल हिन्द'** में भारत का विस्तृत वर्णन किया है।
- **चाऊ-जु-कुआ (1225-95 ई.)** :- चीनी व्यापारी जिसकी पुस्तक **'चु-फान-ची'** में दक्षिण भारत और चीन के व्यापारिक संबंध का उल्लेख है।
- **शिहाबुद्दीन अल उमरी(13वीं शताब्दी)** :- सीरिया से आये इस यात्री ने **'मसालिक अल-अबसार-फी-ममालिक-उल-अमसार'** नामक पुस्तक में भारत के साथ व्यापारिक संबंधों की चर्चा की है।
- **मार्कोपोलो (1292-94 ई.)**:-वेनिस (इटली) से आये इस यात्री ने **'सर मार्कोपोलो की पुस्तक'** में दक्षिण भारत की दशा का स्वाभाविक वर्णन किया है। इसे 'मध्यकालीन यात्रियों का राजकुमार' कहा गया है।
- **शेख फकह अबू अब्दुल्ला इब्नबतूता (1333-47 ई.)** :- सुल्तान मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में आने वाले मोरोक्को निवासी इब्नबूतता ने **'रेहला'** नामक ग्रंथ में समकालीन भारत का वृहद वर्णन किया हैं।
- **निकोलो कोण्टी (1420-21 ई.)** :- विजयनगर साम्राज्य की यात्रा करने वाले प्रथम इतालवी यात्री देवराय प्रथम के शासनकाल में भारत पहुँचा। उसने विजयनगर की दशा का वास्तविक वर्णन किया है।
- **अब्दुर्रज्जाक (1443-44 ई.)** :- फारस के सम्राट शाहरुख के दूत के रूप में कालीकट के जमोरिन के दरबार में पहुंचा। 1443 ई. में इसने विजयनगर सम्राट देवराय-II के शासनकाल में वहाँ की यात्रा की। उसने विजयनगर शहर का अत्यंत सजीव चित्रण किया है तथा इसे विश्व का सबसे अद्भुत और बड़ा नगर बताया।

- **एथेनेसियस निकितिन (1470-74 ई.)** :- रूसी घोड़ो के सौदागर ने बहमनी के सुल्तान मुहम्मद-III के शासनकाल में बीदर की यात्रा की और वहाँ की दशा का वर्णन किया।
- **दुआर्ते बारबोसा (1500-16 ई.)** :- पुर्तगाली यात्री जिसने कृष्णदेवराय के समय विजयनगर की यात्रा की। दो खंडों में लिखी अपनी पुस्तक **'दुआर्ते बारबोसा की पुस्तक'** में विजयनगर तथा अन्य दक्षिणी राज्यों की स्थिति का वर्णन किया है। इसने पुर्तगाली गवर्नर अल्बूकर्क के दुभाषिये का कार्य भी किया।
- **लुडोविको डि बार्थेमा (1502-08 ई.)** :- पुर्तगाली यात्री ने अपनी पुस्तक **'लुडोबिको डि बार्थेमा का यात्रा वृतांत'** में गोआ और कालीकट के पश्चिमी तट के साथ-साथ विजयनगर साम्राज्य का अत्यंत रोचक वर्णन किया है।
- **डोमिंगोस पोयज (1520-22 ई.)** :- पुर्तगाली यात्री ने विजयनगर सम्राट कृष्णदेव राय के शासनकाल में वहाँ की यात्रा की। **'डोमिंगोस पोयज की कथा'** नामक पुस्तक में इसने इस राज्य का विषद् वर्णन किया है। इसने विजयनगर शहर को रोम के समान वैभवशाली पाया।
- **फर्नांडो नूनिंज (1535-37 ई.)** :- पुर्तगाली घोड़ों के व्यापारी ने अच्युतराय के शासनकाल में विजयनगर की यात्रा की और अपने अनुभव **'क्रॉनकल आफ फर्नास (फर्नांडो) नूनिंज'** नामक पुस्तक में लेख बद्ध किये।
- **सीजर फ्रेडरिक (1567-68 ई.)** :- पुर्तगाली यात्री ने तालीकोटा के युद्ध (1565 ई.) के बाद विजयनगर की यात्रा की और इसके विनष्ट वैभव का उल्लेख किया।
- **राल्फ फिच (1583-91 ई.)** :- भारत आने वाले प्रथम अंग्रेज यात्री ने 16वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में व्यापारिक तथा नगर केन्द्रों का मूल्यवान विवरण प्रस्तुत किया।
- **विलियम हॉकिंस (1608-11 ई.)** :- मुगल सम्राट के दरबार में ब्रिटिश शासक जेम्स-Iके दूत के रूप में आने वाले अंग्रेज यात्री ने समकालीन भारतीय दशा का उचित वर्णन किया है। इसे जहाँगीर ने 400 घोड़ो का मनसब दिया।
- **सर टॉमस रो (1615-19 ई.)** :- जहाँगीर के दरबार में आने वाला दूसरा अंग्रेज दूत जिसे मुगल सम्राट से व्यापार का फरमान प्राप्त हुआ। इसने अपने यात्रा विवरण 'पूर्वी द्वीपों की यात्रा' में मुगल दरबार का वास्तविक वर्णन किया है।
- **पीत्रो डेलावेली (1623-26 ई.)** :- इटली से आने वाले इस यात्री ने भारत के तटीय प्रदेशों की विस्तृत यात्रा की तथा कोंकण, मालाबार, कैम्बे (खंभात) के धार्मिक उत्सवों, पशु अस्पतालों आदि का वर्णन किया।

- **पीटर मुण्डी (1630-34 ई.)** :- मुगल सम्राट शाहजहाँ के काल में भारत आने वाले इस इतालवी यात्री ने 1630-32 ई. के बीच पड़े भीषण अकाल और राज्य द्वारा उठाये गये कदमों का उल्लेख किया।
- **जीन बैपटिस्ट ट्रैवनियर (1638-63 ई.)** :- फ्रांसीसी यात्री ने 1638-1663 ई. के बीच 6 बार भारत की यात्रा की। अपने यात्रा विवरण '**ट्रैवल्स इन इण्डिया**' में शाहजहाँ और औरंगज़ेब के शासनकाल का विवरण दिया है। हीरे का व्यापारी होने के कारण इसने हीरे के व्यापार और खनिजों का विस्तृत विवरण दिया है। इसने 'तख्ते ताउस' का उल्लेख किया है।
- **जान एल्बर्ट डि माण्डेस्टो (1638 ई.)**- इस जर्मन यात्री ने सूरत की यात्रा की और इस प्रदेश की व्यापारिक गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया हैं।
- **निकोलाओं मनूची (1653-1708 ई.)** :- इतालवी यात्री ने मुगल राजकुमार दारा शिकोह की सेना में तोपची की नौकरी की और उसकी औरंगज़ेब के हाथों पराजय होने के बाद चिकित्सक का पेशा अपनाया। इसका संस्करण ग्रंथ **'स्टोरियो दो मोगोर'** में समकालीन भारत का अत्यंत वास्तविक और सजीव चित्रण है।
- **फ्रांसिस बर्नियर (1656-1717 ई.)** :- पेशे से चिकित्सक यह फ्रांसीसी यात्री दारा शिकोह और औरंगज़ेब के बीच हुये उत्तराधिकार के युद्ध का साक्षी था। इसका वर्णन इसने अपनी पुस्तक '**हिस्ट्री ऑफ द लेट रेबेलियन इन द स्टेट्स आफ द ग्रेट मुगल**' में किया है। इसकी एक अन्य पुस्तक '**ट्रेवल्स इन द मुगल एंपायर**' में मुगल साम्राज्य के इतिहास का अत्यंत महत्त्वपूर्ण वर्णन किया है।
- **जीन डि थेवेनार (1666 ई.)** :- फ्रांसीसी यात्री ने सूरत की यात्रा की तथा एलोरा का उल्लेख किया।
- **जानफ्रियर (1672-81 ई.)** :- इस अंग्रेज यात्री ने भारत की आर्थिक दशा का वर्णन किया।

मध्यकालीन भारत की घटनाओं का कालक्रम

मध्यकालीन भारत – दक्षिण भारत

300–888 ई.	काँची के (कांजीवरम्) पल्लव वंश।
500–757 ई.	वातापी के प्रथम चालुक्य (पश्चिम एवं मध्य दक्कन)
630–970 ई.	वेंगी के पूर्वी चालुक्य वंश (पूर्वी दक्कन)।
973–1189 ई.	कल्याणी के द्वितीय चालुक्य (पश्चिमी चालुक्य)।
753–973 ई.	मान्यखेत के राष्ट्रकूट।
788–820 ई.	शंकराचार्य जिन्होंने अद्वैतवाद के सिद्धांत का प्रतिपादन किया।
850–1267 ई.	तंजौर (थन्जावुर) के चोल।
985–1014 ई.	राजराजा चोल ने तंजौर में बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।
1000 ई.	भूमि सर्वे की शुरुआत करवायी।
1000–1023 ई.	वारंगल के काकतीय वंश-बेट राज्य (संस्थापक); प्रतापरुद्रदेव (अंतिम शासक)।
1014–1044 ई.	राजेन्द्र चोल, श्रीलंका विजय (1008), बंगाल पर आक्रमण (1021) कइदारम (सुमात्रा एवं मलय पठार) अभियान (1025)
1022 ई.	गंगा घाटी में चोलों का अभियान। राजेंद्र चोल ने उड़ीसा के सोमवंश तथा बंगाल के पालवंश को हराया।
1044–1052 ई.	राजाधिराज प्रथम।
1052–1064 ई.	राजेन्द्र द्वितीय।
1070 ई.	वीर राजेन्द्र।
1070–1120 ई.	कोलुतुंग प्रथम का शासनकाल जिसने आंध्र को चोल साम्राज्य में मिला दिया। (1076)
1120–1267 ई.	परवर्ती चोल।
1126–1322 ई.	वारंगल (आंध्र) का काकतीय राजवंश। काकतीय शासक गणपति (1198–1261) ने अपनी राजधानी हन्माकोंडा से हटाकर वारंगल बनाया तथा समुद्री व्यापार को बढ़ावा दिया उसका उत्तराधिकारी उसकी पुत्री रुद्रम्बा (1261–90) बनी जो मध्यकालीन दक्षिण भारत की सबसे प्रसिद्ध शासिका बनी। प्रतापरुद्रदेव (1290–1322) काकतीय वंश का अंतिम शासक था। दिल्ली सल्तनत द्वारा काकतीय साम्राज्य का अधिग्रहण करना। कल्याणी के चालुक्य वंश के शासन की समाप्ति तथा देवगिरि के यादव वंश का उत्थान।
1189–1311 ई.	देवगिरि यादव वंश। भीलम्मा ने यादव वंश की स्थापना की। रामचंद्र, देवगिरि अंतिम शासकों में से एक थे। इसी के शासनकाल के समय में दिल्ली सल्तनत द्वारा देवगिरि का

	अधिग्रहण किया गया। (1311)।
1288–1293 ई.	वेनिस का यात्री मार्को पोलो दक्षिण भारत पहुँचा उसने वह काकतीय वंश के सबसे महत्वपूर्ण बंदरगाह मोटूपल्ली की यात्रा की (1293), रुद्रम्बा के प्रशासनिक गुणों की तारीफ की।
1279 ई.	1216–1323 ई. मदुरई का पाण्ड्ये साम्राज्य। कुलशेखर पाण्ड्येा पाण्ड्येावंश का सबसे प्रतापी शासक था। इसके साम्राज्य को मार्को पोलो ने संसार का सबसे महान साम्राज्य बताया गया था। तुगलकों द्वारा मदुरई (माबर) का विजय तथा पाण्ड्येा साम्राज्य को दिल्ली सल्तनत में मिलाना(1322–23)। राजेन्द्र तृतीय (1246–79) के शासनकाल में चोल वंश का पतन।
1334–70 ई.	जलालुद्दीन अहसान द्वारा मदुरा सल्तनत की स्थापना। विजयनगर द्वारा होयसाल साम्राज्य को अपने में मिला लेना (1346)।
उत्तर भारत	
630–955 ई.	कश्मीर का कारकोटक वंश। 712 ई. अरबों द्वारा सिंध की विजय।
724–760 ई.	कारकोटक वंश का सबसे प्रतापी राजा ललितादित्य मुक्ताविद था जिसने प्रसिद्ध (मार्तंड (सूर्य) मंदिर का निर्माण करवाया)।
736 ई.	दिल्ली के प्रथम नगर दिल्लिका की स्थापना।
730 ई.	कन्नौज का यशोवर्मन।
760–1142 ई.	बंगाल एवं बिहार के पालवंश।
770–810 ई.	धर्मपाल का शासनकाल। धर्मपाल ने विक्रमशिला विश्वविद्यालय का निर्माण करवाया।
815–885 ई.	पाल वंश के सबसे प्रतापी राजा देवपाल का शासनकाल। धर्मपाल ने जावा एवं सुमात्रा जैसी सदूर-पूर्वी द्वीपों से सांस्कृतिक संबंध कायम रखा। उसने नालंदा विश्वविद्यालय को कई दान दिए।
800–1036 ई.	कन्नौज के गुर्जर-प्रतिहार वंश की वत्सराज द्वारा स्थापना।
835–885 ई.	भोज (गुर्जर-प्रतिहार)। उसके शासनकाल में अरबी यात्री सुलेमान आया।
850 ई.	विजयालय (चोल) द्वारा पाण्ड्येा वंश से तंजौर को छीनना।
855–939 ई.	कश्मीर का उत्पल वंश।
860 ई.	सुमात्रा (इंडोनेशिया) के बलापुत्र द्वारा नालंदा में एक विहार की स्थापना।
883–1026 ई.	काबुल एवं पंजाब के हिन्दुशाही वंश।
916–1203 ई.	जेजाक भुक्ती (बुंदेलखण्ड) के चंदेल वंश। इस वंश के शासकों ने खजुराहो के प्रसिद्ध

	मंदिरों का निर्माण करवाया।
939–1339 ई.	कश्मीर का लोहार वंश।
940–967 ई.	कृष्ण तृतीय (राष्ट्रकुट)।
950–1195 ई.	त्रिपुरी मध्य प्रदेश के कलचुरी वंश।
973–1192 ई.	सांभरी (अजमेर, राजस्थान) के चहमान वंश।
974–1238 ई.	**अन्हिलवाड़** (गुजरात) के **चालुक्य** वंश जिन्हें सोलंकी वंश के नाम से जाना जाता है।
974–1233 ई.	धार (मालवा, मध्यप्रदेश) का परमार वंश।
980–1003 ई.	शासिका दीद्दा का शासनकाल जो कश्मीरी-इतिहास की सबसे दिलचस्प शासक थी। साथ ही वह भारत के प्रसिद्ध महिला शासकों में से एक थी। सबसे प्रतापी एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी परमार शासक भोज का शासनकाल। उसने लगभग दो दर्जन पुस्तकें लिखी।
1076–1435 ई.	उड़ीसा का पूर्वी गंग वंश।
1080–1194 ई.	कन्नौज के गहड़वाल वंश। सन् 1194 ई. में मुहम्मदगोरी ने गहड़वाल शासक जयचंद्र को पराजित किया तथा उसकी हत्या कर दी।
1118–1205 ई.	बंगाल का सेन वंश। इस वंश का संस्थापक विजय सेन एवं अंतिम शासक लक्ष्मण सेन था।
1020–1030 ई.	महान अरबी यात्री व महान किताब-उल-हिद के लेखक अलबरूनी का भारत आगमन।
1000–1027 ई.	महमूद गजनी का आक्रमण। उसने भारत पर सत्रह बार आक्रमण किए। अंतिम आक्रमण जाटों पर
1001 ई.	वाही हिन्द का युद्ध। इस युद्ध में मुहम्मद गजनी ने हिन्दू-शाही शासक जयपाल को पराजित किया। अहमद नियातगीन ने वाराणसी को जीता।
1175–1206 ई.	मुहम्मद गोरी का आक्रमण। सन् 1179 में गुजरात की विजय जिसमें मूलराज द्वितीय विजयी हुआ। तराईन का द्वितीय युद्ध। युद्ध 1192 में हुआ जिसमें पृथ्वीराज की हार हुई। सन् 1194 ई. के चंदावर के युद्ध में जयचंद की हार हुई। 1193-95 में अजमेर एवं ग्वालियर की विजय। 1202 में बंगाल पर विजय। सन् 1206 ई. में मुहम्मदगोरी की हत्या हो गई तथा कुतुबुद्दीन ऐबक दिल्ली की राजगद्दी पर बैठा।
1179–92 ई.	पृथ्वीराज तृतीय जिसे राय पिथौरा भी कहा जाता है का शासनकाल। उसने सन् 1191 ई. के तराईन के प्रथम युद्ध में मुहम्मदगोरी को पराजित किया किंतु 1192 ई. में पृथ्वीराज तृतीय की हार हुई।
1194 ई.	चंदावर का युद्ध जिसमें कन्नौज के गहड़वाल शासक जयचंद्र की पराजय हुई एवं

	मुहम्मदगोरी द्वारा उसका वध कर दिया गया।
1202 ई.	मुहम्मदगोरी के एक गुलाम बख्तियार खिलजी द्वारा बंगाल एवं बिहार की विजय।
दिल्ली सल्तनत (1205-1526)	
इल्वरी वंश	
1206 ई.	कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा दिल्ली सल्तनत की स्थापना। साथ वह वंश दिल्ली सल्तनत के प्रथम राजवंश इल्वरी वंश का संस्थापक बना।
1210 ई.	कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु।
1211-1236 ई.	इल्तुतमिश का शासनकाल। उसने अपने अमीरों का एक नया वर्ग तैयार किया जिसे तुर्कान-ए-चिहलगानी कहा जाता है।
1221 ई.	चंगेज खाँ द्वारा उत्तर पश्चिम भारत की विजय।
1231 ई.	कुतुबमीनार का निर्माण संपन्न हुआ।
1236-40 ई.	इल्तुतमिश की पुत्री रजिया का शासन काल। वह मध्यकालीन भारत की पहली एवं अंतिम महिला शासिका थी।
1246-65 ई.	नसीरू-उद्-दीन महमूद।
1265-85 ई.	बलबन
1288-93 ई.	वेनिस के यात्री मार्को पोलो भारत पहुँचा।
खिलजी वंश 1290-1320 ई.	
1290-1296 ई.	खिलजी वंश के संस्थापकों जलालुद्दीन फिरोज खिलजी का शासनकाल।
1294 ई.	अलॉउद्दीनखिलजी द्वारा देवगिरि की विजय।
1296-1316 ई.	अलॉउद्दीनखिलजी का शासनकाल। सन् 1299 में गुजरात, 1301 ई. में रणथंभौर, 1303 में चित्तौड़ तथा 1305 में मालवा को जीत लिया। सन् 1309-1313 में मलिक काफूर के नेतृत्व में दक्कन-विजय संपन्न हुई। इसने कई सुधार कार्य किए जिसमें से चर्चित उसकी बाजार नीति या आर्थिक-नियंत्रण की नीति थी। उसने अपनी नई राजधानी सिरी (दिल्ली) को सन् 1302 में बनाया।
1316-20 ई.	शिहाबुद्दीन उमर-कुतुबुद्दीन मुबारक तथा खुसरव का शासनकाल। सन् 1320 ई. में खिलजी वंश की समाप्ति।
तुगलक वंश 1320-1414 ई.	तुगलक वंश के संस्थापक गियासुद्दीन तुगलक (गाजी मलिक) का शासनकाल। मुहद्दद जौन (उलुग खाँ) के नेतृत्व में दक्कन का द्वितीय अभियान। 1321-23 ई; में काकतीय एवं पाण्ड्रेय राजवंश को दिल्ली सल्तनत में मिला लिया गया।
1325-1351 ई.	मुहम्मद बिन तुगलक।

	दिल्ली से दौलताबाद राजधानी-परिवर्तन (1327)।
	सांकेतिक मुद्रा को शुरुआत। (1329)
1351-88 ई.	सुलतान फिरोज तुगलक।
1388-1414 ई.	परवर्ती तुगलक शासकों का काल।
1398 ई.	सुलतान महमूद के शासनकाल में तैमूर लंग के आक्रमण ने दिल्ली को बर्बाद कर दिया।
सैय्यद वंश 1414-51 ई.	सैय्यद वंश का शासनकाल। खिज्र खाँ (1414-21 ई.)। मुबारक खाँ (1421-34)। मुहम्मद शाह (1434-45)। अलॉउद्दीन आलम शाह (1445-51)।
लोदी वंश 1451-1526 ई.	बहलोल लोदी (1451-89 ई.)। सिकंदर लोदी (1489-1517)। इब्राहीम लोदी (1517-26), पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने इब्राहीम लोदी को पराजित किया।
1469 ई.	गुरु नानक का जन्म।
1506 ई.	सिकंदर लोदी द्वारा दिल्ली से आगरा राजधानी परिवर्तन।
प्रांतीय राजवंश -गुजरात (1392-1526)	
1392-1526 ई.	मुजफ्फर शाह (1392-1410) द्वारा स्वतंत्र गुजरात की स्थापना। अहमदनगर के संस्थापक अहमदशाह (1411-43), मुहम्मद शाह (1443-51), अहमदशाह द्वितीय (1451-58), दाउद खान, महमूद बेगरहा (1458-1511), और मुजफ्फर शाह (1511-26)।
खानदेश का फारूकी राजवंश 1390-1526 ई.	
1390-1526 ई.	रज़ब खान द्वारा खानदेश के फारूकी वंश की स्थापना।
मालवा 1401-1531 ई.	दिलावर खान द्वारा मालवा के गोरी वंश की स्थापना।
1435-1531 ई.	मालवा के खिलजी वंश का शासनकाल जिनकी राजधानी मांडु थी।
जौनपुर का शारकी राजवंश 1394-1479 ई.	
1394-1399 ई.	मलिक सरवर का शासनकाल। मलिक सरवर ने जौनपुर के शारकी वंश की स्थापना की।
बंगाल का इलियास शाही राजवंश 1399-1519 ई.	
1493-1519 ई.	अलॉउद्दीन हुसैन शाह बंगाल का एक यादगार शासक था। इसके शासनकाल में चैतन्य ने अपने संप्रदाय का प्रचार-प्रसार किया तथा बंगाल में बगाली साहित्य का विकास हुआ। इस समय के एक हिन्दु लेखक ने उसे कृष्ण का अवतार बताया है।
कश्मीर का शाहमिरि वंश 1339-1529 ई.	
1339-1342 ई.	शाहमिरि या दमसुद्दीन द्वारा शाहमिरि वंश की स्थापना।
1420-1470 ई.	कश्मीर के सबसे महान एवं भारत के सबसे प्रबुद्ध मुस्लिम शासक जैनुअल अबीदीन का शासनकाल। इसी के शासनकाल में जोनराज द्वारा राजतरंगिणि के द्वितीय भाग की रचना

	की गई।
मेवाड़ का सिसोदिया वंश	
1509–1528 ई.	मेवाड़ घराने के सबसे प्रतापी राजा राणा सांगा का शासनकाल। सन् 1527 ई.; में खानवा के युद्ध में बाबर के हाथों राणा सांगा की पराजय हुई।
1527–1597 ई.	महाराणा प्रताप।
मारवाड़ का राठौर वंश 1241–1678 ई.	
1434/35–70 ई.	इस वंश के सबसे शक्तिशाली शासक कुपुलेन्द्र गजपति का शासनकाल।
विजयनगर साम्राज्य	
1336 ई.	हरिहर एवं बुक्का द्वारा विजयनगर साम्राज्य की स्थापना। ये दोनों विजयनगर के प्रथम राजवंश संगम के भी संस्थापक भी थे।
1336–1649 ई.	विजयनगर के प्रथम राजवंश को संगम वंश कहा जाता है। हरिहर द्वितीय (1337–1404) के शासनकाल में गोवा तथा कोंकण को सन् 1380 में विजयनगर साम्राज्य में मिला लिया गया। देवराय द्वितीय (1426–46) संगम वंश का सबसे प्रतापी राजा था।
1485 ई.	सलुव नरसिम्ह (1480–90) द्वारा विजयनगर के द्वितीय राजवंश सलुव वंश की स्थापना।
1503–70 ई.	नरस नायक या उसके पुत्र वीर नरसिंह द्वारा विजयनगर के तीसरे राजवंश तुलुवा वंश की स्थापना।
1509–29 ई.	विजयनगर के सबसे प्रतापी राजा कृष्णदेवराय का शासनकाल।
1530–42 ई.	विजयनगर के सम्राट वेंकट प्रथम तथा उसका संरक्षक तिरूमल।
1543–65 ई.	विजयनगर का सम्राट सदाशिव तथा उसका संरक्षक रामराय। 1565 ई. में रक्तक्षासी–तँगड़ी (तालकीकोट) का युद्ध। विजयनगर साम्राज्य का पतन। रामराय की मृत्यु। विजयनगर साम्राज्य को पेनुकोंडा में स्थान परिवर्तन।
1565–70 ई.	पेनुकोंडा से सदाशिव ने शासन प्रारम्भ किया तथा तिरूमला उसका संरक्षक बना।
1570–1649 ई.	तिरुमला ने विजयनगर के चौथे राजवंश अरावीडू वंश की स्थापना की (1570)।
बहमनी साम्राज्य 1346–1518	
1346 ई.	अलॉउद्दीन हसन बहमान शाह द्वारा बहमनी साम्राज्य की स्थापना।
1347–1422 ई.	गुलबर्ग चरण। गुलबर्ग बहमनी साम्राज्य की राजधानी रहा। इसके बाद बीदर को नई राजधानी बनाया गया। इस चरण का सबसे प्रतापी शासक सुल्तान फिरोज शाह (1397–1422) था।
1422–1518 ई.	बीदर चरण। सुल्तान अहमद शाह ने बीदर को अपनी नई राजधानी बनाया।

1463–81 ई.	वजीर एवं वकील–उस–सल्तनत महमूद गाँवा का काल। विजयनगर साम्राज्य से गॉड बेलगम तथा हुबली को जीता। 1481 ई. में उसका वध कर दिया गया।
1482–1518 ई.	बहमनी साम्राज्य का विघटन तथा उसकी जगह पाँच नए बहमनी उत्तराधिकार राज्यों का उदय।
बहमनी साम्राज्य का उत्तराधिकारी राज्य	
1490–1633 ई.	अहमदनगर का निजामशाही साम्राज्य। सन् 1490 ई. में मलिक अहमद बाहरी ने इस साम्राज्य की स्थापना की। दक्षिण भारत के प्रसिद्ध व्यक्तियों में एक निजामशाही वजीर मलिक अंबर (1600–26) का काल। सन् 1633 ई. में अहमदनगर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।
1490–1574 ई.	बरार का आदमशाही राज्य। इस राज्य की स्थापना अली बरीद (1528–80) ने की थी। उसे रबाह–ए–दक्कन या दक्कन का लोमड़ी भी कहा जाता है। सन् 1619 ई. में बरीदशाही राज्य को बीजापुर में मिला लिया गया।
1518–1687 ई.	गोलकुंडा का कुतुबशाही राज्य। इस राज्य की स्थापना सुलतान कुली (1528–43) ने की थी। मुहम्मद कुली कुतुबशाह (1580–1612)। इस राज्य का सबसे प्रतापी राजा हुआ। उसने 1509 ई. में हैदराबाद में अपनी नई राजधानी का निर्माण करवाया। सन् 1687 ई. में गोलकुंडा का मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।
पुर्तगाली	
1498–1529 ई.	सन् 1498 में वास्को–डी–गामा कालीकट पहुँचा। सन् 1500 में केबराल के नेतृत्व में पुर्तगाली जहाज कालीकट पहुँचा। 1502–वास्को–डी–गामा की द्वितीय भारत यात्रा। 1505–09–डी अलमेईडा भारत में प्रथम पुर्तगाली वायसराय बना। 1509–15–अलबुकर्क ने वायसराय के रूप में उसका स्थान लिया। 1510–बीजापुर के आदिलशाही सुल्तान से गोवा जीता। 1511–मलक्का की विजय। पुर्तगाली वायसराय नूनो–दी–कुन्हा ने पुर्तगाली सरकार का कार्यालय कोचीन से गोवा स्थानांतरित किया।
मुगल साम्राज्य 1526–1707 ई.	
1519–26 ई.	बाबर ने भारत पर सात बार आक्रमण किया। बाबर ने स्वयं स्वीकार किया है कि उसने भारत पर पाँच बार आक्रमण किया।
1526 ई.	पानीपत की लड़ाई में बाबर ने सुल्तान इब्राहीम लोदी को हराया। इस युद्ध में इब्राहीम लोदी की हत्या कर दी गई। भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना।
1527 ई.	खानवा का युद्ध। बाबर ने मेवाड़ के राणा सांगा को पराजित किया।
1530 ई.	बाबर की मृत्यु।

1530-56 ई.	हुमायूँ: सन् 1533 ई. में दीन पनाह नामक एक नए नगर की स्थापना दिल्ली में की गई। मालवा तथा गुजरात का विजय-1534-35।
1540 ई.	बिलग्राम का युद्ध।
1540-54 ई.	निर्वासन का काल। (हुमायूँ)
1555 ई.	दुबारा राज्य हासिल किया।
1556 ई	हुमायूँ की मृत्यु।
1533 ई.	वैष्णव संत चैतन्य की मृत्यु।
1540-55 ई.	सुर साम्राज्य।
1540-45 ई.	शेरशाह सूरी।
1539 ई.	चौसा का युद्ध। इस युद्ध में शेरशाह ने हुमायूँ को पराजित किया।
1540 ई.	बिलग्राम (कन्नौज) का युद्ध। शेरशाह ने हुमायूँ को फिर पराजित किया।
1556-1605 ई.	अकबर का शासनकाल। पानीपत के द्वितीय युद्ध में अकबर ने हेमू को हराया।
1556-60 ई.	बैरम खाँ का संरक्षण काल।
1562 ई.	अंबर के राजा भारमल की पुत्री के साथ अकबर की शादी संपन्न हुई।
1564 ई.	अकबर ने जजिया कर समाप्त किया।
1571 ई.	अकबर ने फतेहपुर सिकरी में इबादत खाना की स्थापना की।
1576 ई.	हल्दी घाटी की लड़ाई जिसमें महाराणा प्रताप की हार हुई।
1579 ई.	महजरनामा
1580 ई.	प्रथम ईसाई मिशनरियों का एक दल अकबर के दरबार में पहुँचा।
1582 ई.	अकबर ने दीन-ए-इलाही की शुरुआत की।
1591 ई.	फैजी को दक्कनी राज्यों में मुगल दूत के रूप में भेजा गया।
1600 ई.	अकबर का दक्कन अभियान तथा अहमदनगर का घेराव।
1601-02 ई.	सलीम का विद्रोह।
1605 ई.	अकबर की मृत्यु। (अक्टूबर 25/26)
1605-27 ई.	जहाँगीर का काल
1611 ई.	जहाँगीर ने नूरजहाँ से शादी की।
1611 ई.	अंग्रेजों का प्रथम मसुलीपट्टनम आगमन।
1614 ई.	मेवाड़ के राणा अमर सिंह के साथ संधि।
1622 ई.	फारसियों द्वारा कंधार का पुनर्अधिग्रहण।

1623 ई.	खुर्रम का विद्रोह।
1624 ई.	अहमदनगर के मलिक अंबर ने मुगल सेना को पराजित किया।
1627 ई.	जहाँगीर की मृत्यु।
1627-58 ई.	शाहजहाँ का काल
1632 ई.	पुर्तगालियों के खिलाफ अभियान तथा उनके हुगली संगठन को नष्ट कर दिया।
1633 ई.	अहमदनगर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।
1639 ई.	बीजापुर एवं गोलकुण्डा के साथ पहली संधि।
1636 ई.	औरंगजेब को दक्षिण का वायसराय नियुक्त किया गया।
1649 ई.	मुगलों से कंधार छीनने की प्रयास की शुरुआत।
1649-52 ई.	कंधार को वापस जीतने के लिए मुगल अभियान।
1657 ई.	बीजापुर के साथ द्वितीय संधि।
1658 ई.	उत्तराधिकार का युद्ध। दारा की पराजय। औरंगजेव ने शाहजहाँ को जेल में डाला।
1666 ई.	शाहजहाँ की मृत्यु।
1658-1707 ई.	औरंगजेब का काल
1658 ई.	दिल्ली में राज्याभिषेक (जुलाई 31)।
1659 ई.	दारा का वध।
1660 ई.	मीर जुमला को बंगाल का वायसराय नियुक्त किया गया।
1662 ई	मीर जुमला ने असम को जीता।
1672 ई.	मुगलों के साथ शिवाजी ने पुरंदर की संधि की।
1672 ई.	अफरीदी एवं सतनामी विद्रोह।
1675 ई.	राजगढ़ में शिवाजी का राज्याभिषेक।
1675 ई.	सिख गुरु तेग बहादुर की हत्या।
1679 ई.	मारवाड़ अभियान।
1681 ई.	राजकुमार अकबर का विद्रोह। अपने विद्रोही पुत्र को ढूँढ़ने औरंगजेब दक्कन पहुँचा।
1686 ई.	बीजापुर को मुगल सम्राज्य में मिला लिया गया।
1687 ई.	गोलकुण्डा को मुगल सम्राज्य में मिला लिया गया।
1688 ई.	आगरा के निकट जाटों का विद्रोह।
1689 ई.	शाम्भाजी एवं उनके पुत्र साहू को बंदी बनाया गया।
1707 ई.	अहमदनगर में औरंगजेब की मृत्यु।

परवर्ती मुगल शासक 1707-61 ई.	
1707-12 ई.	बहादुरशाह।
1712-13 ई.	जहाँदार शाह।
1713-19 ई.	फरूर्खसियर। सैय्यद भाइयों का शक्तिशाली सेना तथा राजा की नियुक्ति में भूमिका निभाना।
1719-48 ई.	मुहम्मद शाह।
1720 ई.	सय्यद भाइयों का पतन।
1748-49 ई.	अलवर्दी खान के नेतृत्व में बिहार, बंगाल एवं उड़ीसा एक स्वतंत्र राज्य बना।
1739 ई.	नादिरशाह का आक्रमण।
1748 ई.	अहमदशाह अब्दाली का आक्रमण तथा उसका दिल्ली पहुँचना।
1759 ई.	आलमगीर द्वितीय की हत्या।
1759-1806 ई.	शाहआलम द्वितीय।
1761 ई.	पानीपत का तृतीय युद्ध जिसमें अहमदशाह अब्दाली, मुगल साम्राज्य तथा अन्य उत्तर भारतीय मुस्लिमों प्रमुखों के सेनाओं के गठबंधन ने मराठों को पराजित किया।
मराठा 1626-1761 ई.	
1626-33 ई.	शिवाजी के पिता शाहजी अहमदनगर की सेवा में कार्यरत थे।
1636-64 ई.	शाहजी ने बीजापुर में नौकरी कर ली।
1648 ई.	जिंजी के घेराव में उसे बंदी बनाया गया।
1649 ई.	दस महीने बाद उसे मुक्त कर दिया गया।
1649-64 ई.	बंगलौर प्रांतों की जिम्मेदारी दी गई। उसने कर्नाटक में अपनी शक्ति का विस्तार किया।
जनवरी 23, 1964 ई.	शाहजी की मृत्यु।
1630-1680 ई.	शिवाजी
19 फरवरी 1630	शिवाजी का जन्म। अपने माता-पिता व शिक्षक दादा जी कोंडदेव के संरक्षण में शिवाजी को अपने पैतृक जागीर पूना तथा सुपा का अधिकार मिला।
1648 ई.	शिवाजी ने स्वतंत्र रूप से शासन किया।
1648-58 ई.	मुगल एवं बीजापुर के आदिशाह शासकों के राज्यों को अपने कब्जे में करना शुरू किया।
1659 ई.	प्रतापगढ़ में आदिलशाही अमीर अफजल खान की हत्या कर दी। (अफजल खान काण्ड) बीजापुर से पनहाला छीना। दक्कन के उत्तर एवं दक्षिणी कोंकण को जीता।
मई 1664	शिवाजी के हाथों शाइस्ता खाँ की पराजय।

1665 ई.	मुगलों के साथ पुरंदर की संधि।
मई 1666 ई.	शिवाजी मुगल साम्राज्य की राजधानी आगरा पहुँचा।
अगस्त 1666 ई.	आगरा से छिपकर भाग गया।
1673 ई.	उसने सूरत को तीसरी बार नष्ट किया।
5 जून 1674	रायगढ़ में उसका राज्याभिषेक तथा स्वराज की स्थापना।
1680 ई.	शिवाजी की मृत्यु।
1680-89 ई.	शिवाजी के उत्तराधिकारी एवं पुत्र ?सम्भाजी को उसके पुत्र एवं परिवार सहित बंदी बना लिया गया।
1689 ई.	सम्भाजी की हत्या।
1689-1700 ई.	सम्भाजी का छोटा भाई राजाराम का शासनकाल। उसकी मृत्यु मार्च 1700 ई. में हो गई।
1700-07 ई.	राजाराम का पुत्र शिवाजी द्वितीय राजा बना तथा राजाराम की विधवा पत्नी उसकी संरक्षक बनी। साम्भाजी के पुत्र साहू को मुगल कैद से मुक्त कर दिया गया। वह दक्कन पहुँचा। दक्कन में गृह-युद्ध शुरू हो गया। नवम्बर 1707 में साहू एवं ताराबाई के समर्थकों के बीच खेद का युद्ध हुआ। मराठा साम्राज्य का दो भागों में विभाजन-सतारा में साहू तथा कोल्हापुर में ताराबाई या शिवाजी तृतीय। 1707 में पेशवा बालाजी विश्वनाथ साहू से आकर मिल गया।
1708 ई.	छत्रपति के रूप में साहू का राज्याभिषेक। बालाजी विश्वनाथ को सेनाकर्त्ते (सेना-निर्माता) की उपाधि दी गई।
1708-20 ई.	पेशवा के रूप में बालाजी विश्वनाथ की शक्ति में वृद्धि। (1713 ई.)
1720-40 ई.	बाजीराव प्रथम पेशवा बना। मराठों ने उत्तर में विस्तार शुरू किया।
1739 ई.	नादिरशाह द्वारा भारत पर आक्रमण।
1740-61 ई.	पेशवा के रूप में बालाजी बाजीराव।
1749 ई.	छत्रपति साहू की मृत्यु तथा रामराज का छत्रपति के रूप में राज्याभिषेक।
1757 ई.	प्लासी का युद्ध। बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को क्लाइव ने पराजित किया।
1760 ई.	वांडिवाश का युद्ध जिसमें सर इयरे कूटे के नेतृत्व में अंग्रेजों ने लैली के नेतृत्व वाले फ्रांसिसी सेना को पराजित किया।
1761 ई.	पानीपत का तृतीय युद्ध। अहमदशाह अब्दाली ने मराठों को पराजित किया।
1764 ई.	बक्सर का युद्ध। मुनरो के नेतृत्व में अंग्रेजों ने बंगाल के नवाब मीर कासिम तथा अवध के नवाब शुजा उद-दौला के संयुक्त सेना को पराजित किया।

मध्यकालीन भारतीय इतिहास की शब्दावली

- **आमिल**–राजस्व संग्रहकर्त्ता।
- **अष्टदिग्गज**–विजयनगर (कृष्णदेव राय के) साहित्य के आठ महारथी।
- **अयंगर व्यवस्था**–इस व्यवस्था के अंतर्गत गाँव के लोगों के रोजमर्रा एवं अन्य कृषि संबंधी जरूरतों को पूरा करने वाले पेशेवर व्यक्तियों को नकद वेतन देने के बजाय कृषि उपज में हिस्सा दिया जाता था। इस उपज को अयम कहा जाता था। गाँव के सभी शिल्पी, हस्तशिल्पी, नीच काम करने वाले तथा गाँव का प्रशासनिक अधिकारी सभी उपज का हिस्सा प्राप्त करते थे, इन सबको अयंगर के नाम से जाना जाता है।
- **बरीद**–जाँच अधिकारी।
- **भंडारवाद**–सीधे राजा के अधिकृत गाँव।
- **बीघा**–भूमि लेन-देन माप की इकाई। विभिन्न भागों में अलग-अलग माप है किन्तु कहीं भी एक एकड़ से ज्यादा नहीं होता है।
- **चौथ**–मुगलों एवं अन्य छोटे शासकों द्वारा मराठों को कुल राजस्व वसूली का एक चौथाई दिया जाता था, इससे वे क्षेत्र जिनके राजस्व से भुगतान किया जाता था मराठा सरदारों के लूट-मार से सुरक्षित रहते थे।
- **चेट्टी या चेट्टियारी**–दक्षिण भारत का व्यापारी।
- **दद्नी व्यवस्था**–ऐसी व्यवस्था जिसमें भारतीय व यूरोपियन दोनों व्यापारी हस्त शिल्पी व कारीगरों को नकद रूपये तथा कच्चे माल अग्रिम देते थे तथा बाद में निर्मित माल खरीदते थे। इस अग्रिम राशि को ददन कहा जाता था। वैसे इसकी शुरूआत बंगाल में हुई किन्तु धीरे-धीरे यह पूरे भारत में फैल गई। कुछ मामलों में यह यूरोपियन पुटिंग व्यापार व्यवस्था से अलग था। क्योंकि इस व्यवस्था में व्यापारियों को माल बाजार का मूल्य पर कारीगरों से खरीदना होता था, इस प्रकार व्यापारियों के पास काफी स्वतंत्रता थी।
- **दहसाला**–एक ऐसी व्यवस्था जिसमें विभिन्न फसलों के पिछले दस वर्ष का औसत उपज तथा उनके औसत मूल्य के आधार पर कुल उपज अनुमानित की जाती थी तथा इसका एक तिहाई राजस्व के रूप में वसूला जाता था। यह व्यवस्था अकबर ने शासन के 24वें वर्ष में लागू किया था।
- **देशमुख**–ये उत्तर भारत के चौधरी (ग्राम प्रधान) तथा गुजरात के देसाई के समान ही थे।
- **फड़नीस**–उप लेखापरीक्षक।
- **गौड़**–नाडु का प्रधान (स्थानीय अधिकारी)
- **गौपुरम्**–मंदिर के ऊँचे दरवाजे या गेट
- **इजारा**–राजस्व वसूली के लिए बोली लगाने वाली प्रथा।
- **इजारेदार**–इजारा वसूलने वाला व्यक्ति (पूर्वी भारत)।

- **इक्ता**–दिल्ली सल्तनत के अंतर्गत अधिकारियों को उनके वेतन बदले दी जाने वाली भूमि की इकाई जिसका राजस्व प्राप्तकर्ता अपने व्यक्तिगत कार्यों में खर्च कर सकता था।
- **इक्तेदार**–दिल्ली सल्तनत के अंतर्गत इक्ता प्राप्त व्यक्ति इन्हें मुक्ती भी कहा जाता था।
- **जाग़ीर**–मुगल, दिल्ली सल्तनत के इक्ता के समान व्यवस्था।
- **जजिया**–सभी जिम्मी द्वारा दिया जाने वाला कर।
- **खानकाह** सूफी संतों का आश्रम।
- **खराज**–मध्यकालीन भारत के मुस्लिम राज्यों में वसूला जाने वाला एक कर।
- **खुम्स**–युद्ध का लूट या खनिज पदार्थों में राज्य का हिस्सा जो प्रायः 1/3 वां होता था। लेकिन अलॉउद्दीनख़िलजी के बाद यह मात्रा 4/5 हो गया।
- **मदद-ए-माश**–वैसी भूमि जिससे प्राप्त होने वाला राजस्व राज्य द्वारा किसी धार्मिक एवं सुशिक्षित व्यक्ति या संस्थान को प्रदान किया जाता था।
- **महलवारी**–यह एक ऐसी भू-राजस्व व्यवस्था थी जिसमें वसूली की इकाई व्यक्तिगत कृषक पर न होकर एक गाँव या महाल हुआ करता था। इसके अंतर्गत राज्य को कर भुगतान करने की जिम्मेदारी लोगों पर सामूहिक रूप से होती थी तथा सरकार के पास राजस्व की दर के पुनर्निधारण का अधिकार था। अंग्रेजों द्वारा यह व्यवस्था गंगा घाटी, पंजाब, उत्तर पश्चिम प्रांत तथा मध्य भारत के कुछ इलाकों में लागू किया गया।
- **मलगुजार**–मलगुजार प्राप्त व्यक्ति। मलगुजार, राजस्व वसूली कर अधिकार होता था। यह व्यवस्था अंग्रेजों के अधीन उत्तरी एवं मध्य भारत में प्रचलित थी।
- **मालिक-उल-तुज्जार**–व्यापारियों का प्रमुख (महमूद गांवा तथा बहमनी)।
- **मंडप**–स्तंभयुक्त बड़ा-सा भवन (मंदिर)।
- **मारवाड़ी**–राजस्थान के मारवाड़ के रहने वाले लोग, जो बैंकर, व्यापारी, दलाल आदि का कार्य करते थे।
- **मलेच्छ**–विदेशी (तुर्की, अरबी आदि)।
- **मुकद्दम्**–उत्तर भारत के गाँव का प्रधान इन्हें खोत भी कहा जाता था।
- **नाडु**–विजयनगर के अधीन एक क्षेत्रीय परिषद्।
- **नगरम्**–व्यापारियों का परिषद्।
- **पटेल या पाटिल**–दक्षिण व पश्चिम भारत में गाँव का प्रधान।
- **रैयतवारी**–यह एक राजस्व वसूली की व्यवस्था थी जिसमें राजस्व व्यक्तिगत किसानों पर लगाया जाता था तथा उनको भूमि का स्वामी मान लिया जाता था। इस व्यवस्था में सरकार के पास यह अधिकार था की वह अपनी मर्जी के अनुरूप राजस्व का दर निर्धारित एवं पुननिर्धारित कर सकता था। यह व्यवस्था पहली बार अंग्रेजों द्वारा मद्रास प्रेसीडेंसी में तथा बाद में बम्बई प्रेसीडेंसी में लागू किया गया।

- **सभा एवं उर**–विजयनगर साम्राज्य के अंतर्गत ग्राम परिषद्।
- **श्रेणी**–व्यापारियों, कारीगरों तथा हस्तशिल्पकारों का संगठन।
- **श्रेष्ठी**–व्यापारी।
- **ऋकाबी**–उत्पादन बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा किसानों को दी जाने वाली राशि या कर्ज।
- **टंका**–चाँदी का सिक्का।
- **वारियम्**–सभा का कार्यकारी समिति।
- **विमानन**–मंजिल से ऊपर मंजिल। (मंदिर)
- **विषयपति**–जिले का प्रमुख।
- **वाकिया नवीस**–समाचार देने वाला, संवाददाता।
- **जकात**–सभी संपन्न मुस्लिमों द्वारा भुगतान किया जाने वाला कर। यह कर केवल मुस्लिम राज्य में वसूला जाता था।
- **जामोरिन**–कालीकट के शासक की उपाधि।

****